

आलस्य और अलबेलापन - 63

अव्यक्त बापदादा :- (15.02.2007)

» _ » आज के दिन बापदादा की शुभ आश है अपने आशाओं के दिपक बच्चों प्रति। तो बतायें, पहली लाइन बताओ बतायें? बताना वा सुनना माना क्या? एक आलस्य-अलबेलापन कान से सुनना और दिल में समा देना, ऐसे? निकालेंगे तो नहीं, इतना तो नहीं है लेकिन दिल में ही समा देते हैं। तो आज के दिन, बतायें पहली लाइन बताओ, कांध हिलाओ, टीचर्स कांध हिलाओ। अच्छा झण्डा हिला रहे हैं। डबल फारेन्स बतायें? अपने को बांधना पड़ेगा, तभी कही हों, ऐसे ही नहीं। क्योंकि 70 वर्ष देखो, 70 वर्ष तो बापदादा ने अलबेलेपन, आलस्य और बहाने बाजी, 70 वर्ष खेल देख लिया। चलो 70 नहीं तो 50,40,30,20 लेकिन इतना समय तो यह तीन खेल खूब देखे बच्चों के। तो आज के दिन भक्त जागरण करते हैं, सोते नहीं है, तो आप बच्चों का जागरण कौन-सा है? **कौन-सी नींद में घड़ी-घड़ी सो जाते हो, अलबेलापन, आलस्य और बहाने बाजी की नींद में आराम से सो जाते हैं।**

» _ » तो आज बापदादा इन तीन बातों का हर समय जागरण देखने चाहता है। कभी भी देखो क्रोध आता है, अभिमान आता है, लोभ आता है, कारण क्या बताते हैं? एक बापदादा को ट्रेडमार्क दिखाई देती है, कोई भी बात होती है ना! तो क्या कहते हैं, यह तो चलता है, पता नहीं किसने चलाया है? लेकिन शब्द यही कहते हैं यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। यह कोई नई बात थोड़े ही है, यह होता ही है। यह क्या है? अलबेलापन नहीं है? यह भी तो करता है, मैजॉरिटी क्रोध से बचने के लिए यह किया तब यह हुआ। मैंने किया राग वह नहीं कहेंगे। यह किया ना, यह हुआ ना, इसलिए हुआ। दूसरे पर दोष रखना बहुत सहज है। यह ना करे तो नहीं होगा। और बाप ने कहा वह नहीं होगा। वह करे तो होगा, बाप की श्रीमत पर क्या क्रोध को नहीं खत्म कर सकते? **आजकल क्रोध का बच्चा रोब, रोब भी भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। तो क्या आज चार का भी व्रत लेंगे? जैसे पहली बात का विशेष दृढ़ संकल्प मैजॉरिटी ने किया है। क्या ऐसे ही चार का संकल्प, यह बहाना नहीं देना, इसने यह किया तब मेरा हुआ, और बाप जो बार-बार कहता है, वह याद नहीं, उसने जो किया वह याद आ गया, तो यह बहानेबाजी हुई न! तो आज बापदादा बर्थ डे की गिफ्ट चाहते हैं यह तीन बातें, जो चार को हल्का कर देती हैं।**

» _ » संस्कार का सामना तो करना ही है, संस्कार का सामना नहीं, यह पेपर है। पूज्य, सारे कल्प की एक जन्म में प्राप्ति, वह भी छोटा जन्म, फुल जन्म नहीं है, छोटा जन्म। तो क्या हिम्मत है? जो समझते हैं, हिम्मत रखेंगे जरूर, यह नहीं पुरुषार्थ करेंगे, अटेन्शन रखेंगे. गे गे नहीं चाहिए। छोटे बच्चे नहीं हो, 70 वर्ष पूरे हो रहे हैं। वह तो तीन चार मास के बच्चे गे गे करते हैं। तो आप बाप के साथी हो ना! विश्व कल्याणकारी हो, उसको 70 वर्ष पूरे हो रहे हैं। बापदादा हाथ नहीं उठाते क्योंकि बापदादा ने देखा है हाथ उठाके भी कभी कभी अलबेले हो जाते हैं। लेकिन जो समझते हैं कुछ भी हो जाए, पहाड़ जैसा पेपर भी आ जाए लेकिन पहाड़ को रूई बना देंगे, ऐसा दृढ़ संकल्प करने की, क्योंकि संकल्प बहुत अच्छे करते हो, बापदादा खुश हो जाते हैं, जिस समय संकल्प करते हो। लेकिन

है क्या, 70 वर्ष तो हल्का छोड़ा लेकिन बापदादा देख रहे हैं कि समय का कोई भरोसा नहीं और इस ज्ञान के आधार पर हर पुरुषार्थ की बात में बहुतकाल का हिसाब है। अच्छा अभी अभी कर लेंगे, बहुतकाल का हिसाब है। क्योंकि प्राप्ति हर एक क्या चाहता है? अभी हाथ उठवाते हैं, राम सीता बनेगा कोई? जो रामसीता बनने चाहते हैं वह हाथ उठाओ, राजाई मिलेगी। कोई हाथ उठा रहे हैं। राम सीता बनेंगे, लक्ष्मी नारायण नहीं बनेंगे? उठा रहे हैं? देखो, आप देखो उठा रहे हैं। फारेनर्स उठा रहे हैं? डबल फारेनर्स में काई उठाता है?

» _ » जब बहुतकाल का भाग्य प्राप्त करने चाहते हो, लक्ष्मी नारायण बनना अर्थात् बहुतकाल का राज्य भाग्य प्राप्त करना। तो बहुतकाल की प्राप्ति है। तो हर बात में बहुतकाल तो चाहिए न! अभी 63 जन्म के बहुतकाल का संस्कार है तो कहते हो ना, हमारा भाव नहीं है, भावना नहीं है, संस्कार है 63 जन्म का। तो बहुतकाल का हिसाब है ना। इसीलिए बापदादा यही चाहते हैं कि संकल्प में दृढ़ता की कमी हो जाती है, हो जायेगा. चलता है, चलने दो, कौन बना है, और एक तो बहुत अच्छी बात सबको बाती है बापदादा ने नोट किया है बातें, अपनी हिम्मत नहीं चलती ना, तो कहते हैं महारथी भी ऐसे करते हैं, हमने किया तो क्या हुआ? लेकिन बापदादा पूछते हैं कि क्या जिस समय महारथी गलती करता है, उस समय महारथी है? तो महारथी का नाम क्यों खराब करते हो? उस समय वह महारथी है ही नहीं, तो महारथी कहके अपने को कमजोर करना यह अपने को धोखा देना है। दूसरे को देखना सहज होता है, अपने को देखने में थोड़ी हिम्मत चाहिए। तो आज बापदादा हिसाब लेने आये हैं। लेकिन हिसाब का किताब खत्म कराने की गिफ्ट लेने आये हैं। कमजोरी और बहानेबाजी का हिसाब-किताब, बहुत बड़ा किताब है उसको खत्म करना है। तो हर एक जो समझते हैं हम करके दिखायेंगे, करना ही है, झुकना ही है, बदलना ही है, परिवर्तन सेरीमनी मनानी ही है। जो समझते हैं संकल्प करेंगे वह हाथ उठाओ। दृढ़ या चालू? चालू संकल्प भी होता है और दृढ़ संकल्प भी होता है तो आप सबने दृढ़ उठाया है? दृढ़ उठाया है?

» _ » बाकी आप सभी सम्मुख बैठे हो, सम्मुख का मजा अपना ही है। साइंस के साधनों द्वारा चाहे कितना भी स्पष्ट हो, कितना भी अच्छा लगता हो, लेकिन सम्मुख मधुबन में उन्नति का द्वार अपना ही अनुभव कराता है। अच्छा अभी जो बापदादा ने कहा वह हरेक एक मिनट के लिए दृढ़ संकल्प स्वरूप में बैठो कि बहानेबाजी, आलस्य, अलबेलापन को हर समय दृढ़ संकल्प द्वारा समाप्त कर बहुतकाल का हिसाब जमा करना ही है। कुछ भी हो, कुछ नहीं देखना है लेकिन बाप के दिलतखानशीन बनना ही है, विश्व के तखतनशीन बनना ही है। इस दृढ़ संकल्प स्वरूप में सभी बैठी।

» » व्रत या प्रतिज्ञा

» _ » प्रतिज्ञा परिपक्व बनाती है...

» _ » प्रतिज्ञा करना और स्वयम को बार बार याद दिलाना आवश्यक है...

➤➤ बाबा मिलन के समय संकल्प किया जाये कि आज सोशल मीडिया का प्रयोग नहीं करेंगे, तो यह छोटा सा संकल्प दिनचर्या को शक्तिशाली बना देगा ...

➤➤ **जागरण**

➤➤ शिवरात्रि को भक्त जागरण करते हैं... यह संगम जागरण की वेला है ...

➤➤ स्वयम से पूछें क्या मैं जागा हुआ हूँ

➤➤ सोया हुआ व्यक्ति बहानेबाजी कर सकता है... जागे हुए को बहानेबाजी की जरूरत नहीं है...

➤➤ हमें स्वयम को जगाना है ...

→ यह संकल्प करना कि महारथी ऐसा करते हैं... उसने किया वो हमें याद है, लेकिन बाबा जो कहते हैं वो याद नहीं... क्या ये बहानेबाजी नहीं है?

➤➤ **आदत और संस्कार**

➤➤ कोई कर्म बार बार किया जाये तो वह हमें खींचता है... करते समय पता है कि गलत है पर शरीर मांग करता है...

➤➤ इस संस्कार को तोड़ने के लिए बहुत शक्तिशाली संकल्प चाहिए...

➤➤ उस व्यक्ति या वस्तु से दूरी कर दो... लंबा समय दूर रहने से वो संस्कार धीरे धीरे खत्म हो जायेगा ... लेकिन फिर भी आगे के लिए खबरदार रहना है ...
